शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्त्री-विमर्श : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

मनीष चौरे (शोधार्थी)
डॉ.श्रीमती मंजू तिवारी (शोध निर्देशक)
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय
भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

स्त्री-विमर्श आधुनिक युग की महत्वपूर्ण अवधारणा है। पश्चिमी साहित्य जगत से स्त्री पर नयी दृष्टि से चिंतन प्रारम्भ हुआ। इसका पुरोधा सीमोन द बुआ को माना जाता है। उनकी औपन्यासिक कृति ने स्त्री को देखने का नजरिया बदल दिया। दुनिया में स्त्रीमुक्ति की आकांक्षा को लेकर अनेक संगठन बने आन्दोलन हुए इससे भारत भी अछूता नहीं रहा। प्राचीन भारतीय साहित्य में स्त्री को श्रेष्ठ दर्जा दिया गया है। मध्यकाल तक आते-आते उसे सामाजिक बंधनों और रुढियों में जकड दिया गया। आधुनिक काल में समाज सुधारकों की दृष्टि जब स्त्री के हीन जीवन पर गयी, तब उसकी दशा सुधारने के लिए अनेक आन्दोलन हुए और जकडन से मुक्ति के प्रयास किये गए साहित्यकारों ने भी इसमें अपना योगदान दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में स्त्रीविमर्श पर विचार किया गया है।

भूमिका

स्त्री समाज का दर्पण होती है। यदि किसी समाज में स्त्रियों का जीवन सुदृढ़ एवं उन्मुक्त है, तो इसका सीधा आशय है कि उस राष्ट्र का समाज उन्नत एवं समृद्ध है। नारी के अनेक रूप हैं। नारी सृष्टि की सृजन मार्गदर्शिका एवं विस्तार का केंद्र बिंदु है। वह करुणा की प्रतिमूर्ति मातृत्व की साकार प्रतिमा, सृजन एवं धैर्य की देवी है। जीवन की समूची रसधारा उसी पर आधारित है। प्रेमचंद जी ने नारी के इन्हीं गुणों को परख कर कहा है कि "पुरुष विकास क्रम में नारी से पीछे है। जिस दिन वह भी पूर्ण विकास तक पहुंचेगा वह स्त्री हो जाएगा। वात्सल्य, स्नेह, दया, कोमलता इन आधारों पर सृष्टि थमी है और यह स्त्रियों के गुण हैं।"[1] नारी का सम्मान करना एवं उसके हितों की रक्षा करना हमारे देश की सदियों पुरानी संस्कृति रही है। परंतु यह एक विडंबना ही है कि भारतीय समाज में नारी की स्थिति अत्यंत विरोधाभासी है। कहीं देवी मानकर-'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता'- कहकर उसकी पूजा की गई तो कहीं पाप की खान 'दुवारमकिमेकंनरकस्यनारी-कहकर उसे भोग और पाप की वस्तु समझकर उसका शारीरिक और मानसिक शोषण किया गया। इस अतिवादी परंपरागत मानसिकता ने न तो उसे देवी रहने दिया, और न ही उसे मानवीय समझा गया। वास्तव में वह न तो देवी रूप में पूजना चाहती है और न ही दानवी रूप में भर्त्सना। वह भी पुरुषों की तरह मानवीय गुणों-अवगुणों से परिपूर्ण है। अतःवह भी मानव ही है। वर्षों से समाज का नारी के प्रति शोषण और अत्याचार को देखकर कविवर पंत का हृदय करुणा से द्रवित हो, बरबस ही कह उठता है - "मुक्त करो नारी को

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मानव/चिरबंदिनी नारी को/ युग युग की जरजर कारा से/ जननी, सजनी, सखी, प्यारी को"[2]

आज 'स्त्री-विमर्श' हिंदी-साहित्य का केंद्रीय विषय बन चुका है। इस विषय पर नई-नई पुस्तकों का प्रकाशन तथा विभिन्न स्थानों पर इस विषय से संबंधित संगोष्ठियों का आयोजन इस विषय की संवेदनशीलता एवं महत्ता को प्रतिपादित करता है।

स्त्री-विमर्श और समकालीन चिंतन

वस्तुतः 'स्त्री-विमर्श' समकालीन विचार चिंतन है। प्रारंभिक काल में भी स्त्री जीवन हिंदी साहित्य का मुख्य विषय रहा है। लेकिन तथ्य यह है कि इसमें नारी की या तो जीवन-गाथा केंद्र में रही या उसकी व्यथा-कथा। परंतु आधुनिक युग में नारी अपने अधिकार और स्वाभिमान के प्रति सजग और सचेत है। वह अपने सम्मान और पहचान के लिए समाज से संघर्ष करते हुए स्त्री-मुक्ति जैसी विचारधारा को विकसित करती है। नारी शब्द सर्वप्रथम ऋग्वेद में प्राप्त होता है, जिसका अर्थ है 'याज्ञिक-पत्नी'[3] याज्ञवल्क्य स्मृति में लिखा है - 'रम्यते कन्या पिता:पितांपति: पुलास्तुबार्धके'[4] अर्थ है स्त्री की बचपन में पिता रक्षा करेगा, युवावस्था में पति, और वृद्धावस्था में पुत्र इस प्रकार उसे हमेशा के लिए पुरुषों पर आश्रित बना दिया गया। इस संदर्भ में कथाकार मृणाल पांडे का यह कथन सत्य प्रतीत होता है कि - "समाज में स्त्री की मूल अवधारणा नकारात्मक है। लगभग सभी धार्मिक और दार्शनिक दायरे स्त्री को पुरुष के संदर्भ में एक अपूर्ण और सापेक्ष जीवन के रूप में देखा गया है।"[5] वास्तविकता में पुरुष सत्तात्मक समाज में जहां स्त्री को 'मैं' की चिंता का एहसास होगा, वहीं से स्त्री विमर्श की शुरुआत है। पुरुषों की महिलाओं के प्रति दोहरी मानसिकता वाले इस समाज में भावना की अपेक्षा बुद्धि की कसौटी पर, परंपरा की अपेक्षा आधुनिकता की कसौटी पर, संस्कृति की अपेक्षा कार्य शक्ति की कसौटी पर तथा रंग, रूप, जाति, धर्म की अपेक्षा मानवीय गुणों की कसौटी पर व्यक्ति के मूल्यांकन का सूत्रपात होगा, तभी सही मायने में स्त्री विमर्श के चिंतन को बल मिलेगा। जहां स्त्री-जाति का आदर-सम्मान होता है; उनकी आवश्यकताओं, अपेक्षाओं की पूर्ति होती है उस स्थान, समाज, तथा परिवार पर देवतागण प्रसन्न रहते हैं, जहां ऐसा नहीं होता और उनके प्रति तिरस्कारमय व्यवहार किया जाता है, वहां देवकृपा नहीं रहती। वहां संपन्न किए गए कार्य सफल नहीं होते। "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता:/यत्रेतास्तुन पूज्यंते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:"6 मनुस्मृति का यह श्लोक मानवीय विकास का सांकेतिक सूत्र है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री विमर्श अपने स्वाभिमान की रक्षा और अपने हक की पैरवी है। वह पुरूषों का विरोध नहीं करता, बल्कि उनकी पशुता की बढ़ती सीमा का विरोध करता है। मृणाल पांडे के शब्दों में "नारीवाद पुरुषों का नहीं बल्कि उनकी मान्यता घटाने वाले उस छद्म मुखौटे का प्रतिकार करता रहा है, जो मर्दानगी के नाम परगढ गया है और जिसके पीछे झूठी अहमन्यता और उत्पीड़न प्रवृत्ति के अलावा कुछ नहीं है।"[7] मानव जीवन का अस्तित्व नर-नारी के सहअस्तित्व पर टिका है। आज दोनों के आपसी सहयोग के कारण ही विकास संभव हुआ है। संसार रूपी रथ के नर-नारी दो पहिए हैं। दोनों का सुचारु रूप से संचालन ही मानवता का विकास है। साहित्यकार आशारानी व्होरा स्त्री और पुरुष दोनों की महत्ता को बतलाते हुए कहती हैं, "पुरुष को प्रकृति ने शरीर बल अधिक दिया है तो

स्त्री को दृढ़ता और शरीर-सौंदर्य अधिक। पुरुष संसार में जोश और साहस भरने के लिए बना है, तो स्त्री धैर्य और चरित्र सिखाने के लिए, करुणा और प्रेम बरसाने के लिए। दोनों की भिन्न प्रकृति से ही परस्पर पूरकता और जीवन की पूर्णता संभवहै।"[8]

आज 'स्त्री-विमर्श' की विचारधारा को सफल बनाने की आवश्यकता है। महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रह और दुराग्रहों को त्यागने की। नस्नारी के आंतरिक विरोधों को छोड़कर स्त्री की दशा में सुधार के लिए संगठित रूप में कार्य करने की। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में 'स्त्री विमर्श' पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, दैहिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में समानता एवं स्वतंत्रता की मांग उठा रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में गंभीरता से चिंतन-मनन करने की आवश्यकता है :

पारिवारिक क्षेत्र

छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत वर्षों से समाज में स्त्रियों की पारिवारिक दयनीय दशा को देखते और अनुभव करते हैं और नारी को प्रणय-ग्रंथि में बंधने या पुरुषों की सहचरणी बनने से पहले अपनी कविता के माध्यम से सांकेतिक शब्दों में चेतावनी देते हैं, "इस विनाश के मरू प्रदेश को दे सकती हो मोल/अरि बावरी सोच समझकर अपनी बोली बोल।" कवि का आशय यह है कि तुम वर्षों से इस हृदयहीन पुरुष के छलावे में आकर अपना संपूर्ण नारीत्व इस पर न्यौछावर कर रही हो। तुम इसके मीठे-मीठे शब्दों के माया जाल में फंसकर, इसके साथ विवाह बंधन में बंध रही हो। यह तुम्हें धोखे में रखेगा, प्रपंच रचेगा, तुम्हें प्रताड़ित करेगा और उसके बच्चों को जन्म देती तुम अपना स्वास्थ्य, सौंदर्य और यौवन सब कुछ खो बैठोगी।

- परिवार में परंपरागत पितृसत्तात्मक प्रणाली में अपना अधिकार।
- बच्चों के लालन-पालन के एकाधिकार से मुक्ति।
- पारिवारिक भूमिका के अलावाभी एक स्वतंत्र अस्तित्व की मांग।
- लड़के और लड़की में बिना भेदभाव के समान रुप से पालन-पोषण ।
- परिवार के आर्थिक मामलों में सहभागिता।
- पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता ।
- पारिवारिक दायित्वों में सभी जनों का सहयोग ।
- कामकाजीमहिलाओं के प्रति परिवार का सकारात्मक नजरिया और सहयोगकीभावना।
- परिवार में महिलाओं के स्वाभिमान और सम्मान का भाव।

सामाजिक क्षे

- बाल-विवाह, भ्रूण-हत्या और दहेज-प्रथा पर सख्ती से रोक ।
- समाज में महिलाओं के लिए उचित शिक्षा, सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का प्रबंध।
- पुरुषों के एकाधिकार वाले क्षेत्रों में महिलाओं को प्रवेश।
- महिलाओं के प्रति समाज की रूढ़िवादी एवं दकियानुसी मान्यताओं का सख्ती से दमन।
- समाज की नौकरीपेशा महिलाओं के प्रति सकारात्मक नजरिया एवं उनके मातृत्व का सम्मान।
- अपने व्यक्तित्व को निखारने एवं स्वावलंबन के लिए समाज के हर क्षेत्र में समान अवसर और अनुकूल वातावरण।

आर्थिक क्षेत्र

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

- आर्थिक क्षेत्र किसी भी राष्ट्र के विकास का मूल आधार है। अतः हम इस क्षेत्र में महिलाओं की उपेक्षा कर राष्ट्र के आधे विकास की उपेक्षा कर रहे हैं।
- महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनाने के लिए उनकी रुचि और संस्कार कोध्यान में रखकर नए उपक्रमों की पहचान की जाए।
- शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं के लिए कौशल प्रशिक्षण जैसे कार्यक्रम बड़े स्तर पर चलाकर उन्हें स्वरोजगार प्रदान करें ताकि पुरुषों पर उनकी आश्रिता कम हो।
- अधिकतर निम्न तबके की महिलाएं असंगठित क्षेत्र में काम करने के लिए मजबूर हैं अतः शासन को इन क्षेत्रों में काम करने वाली महिलाओं के लिए अतिरिक्त सुविधाएं एवं अनुकूल वातावरण प्रदान करने की आवश्यकता है ।ताकि इन महिलाओं का शारीरिक एवं मानसिक शोषण ना हो।
- सरकारी एवं व्यवसाय क्षेत्रों में महिलाओं को उचित आरक्षण मिले ताकि वह स्वाभिमान और सम्मान के साथ जीवन यापन कर सके।
- महिलाओं में संस्कार रूप में ही अनुशासन ,परिश्रम, लगन एवं नैतिकता जैसे गुण विद्वान रहते हैं अतः वह आर्थिक क्षेत्रों में होने वाले भ्रष्टाचार पर लगाम लगा सकती है।
- लैंगिक आधार पर कोई भेदभाव ना किया जाए हर क्षेत्र में समान काम एवं समान वेतन दिया जाए।

दैहिक क्षेत्र

- अनैच्छिक यौन संबंधों का विरोध।
- बलत्कार(यौन उत्पीड़न) संबंधी विरोध।
- अनचाहे गर्भधारण, गर्भपात, प्रसव आदि का विरोध।
- स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं स्वतंत्रता का उचित प्रबंध।
- किसी भी महिला को देह या वस्तु की दृष्टि से ना देखा जाए।
- महिलाओं के रूप सौंदर्य की अपेक्षा उनकी बुद्धि और आंतरिक गुणों को प्राथमिकता दी जाए ।
- अपशब्द एवं भद्दी नजरों से न घूरा जाए ।
- बिना किसी तथ्य याअनुमति के सोशल-मीडिया या संचार के माध्यमों पर उनका गलत तरीके से प्रचार ना किया जाए।
- उनकी भावनाओं और सम्वेदनाओं की कद्र करते हुए किसी भी प्रकार से उनके स्वाभिमान को ठेस ना पहुंचाएं जाए।
- जबरदस्ती या मजबूरन कई महिलाएं वेश्यावृत्ति के दलदल में फंस जाती है अतः समाज और शासन को उन्हें दोबारा मुख्यधारा से जोड़ने एवं सम्मान पूर्वक जीने की पहल करना चाहिए।

निष्कर्ष

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में'स्त्री विमर्श' एक ऐसा विमर्श है, जो वर्ग, जाति, वंश, धर्म, प्रांत और देश आदि मर्यादित सीमाओं से परे है ।जहां शोषण, उत्पीड़न, दमन व अन्याय है, चाहे जिस वर्ग, वंश, धर्म, प्रांत और देश की स्त्री पीड़ित हो वह उसका विरोध करता है।

वास्तव में 'स्त्री विमर्श' की अवधारणाया आंदोलन तभी सफल हो सकेंगे जब पुरुषों का महिलाओं के प्रति संकीर्ण मानसिकता वाले दृष्टिकोण में बदलाव आएगा। 'स्त्री विमर्श' के साथ-साथ वर्तमान में पुरुष विमर्श की भी आवश्यकता है, ताकि पुरुषों को रूढ़िवादी मान्यताओं और दोहरी दृष्टिकोण में बदलाव का पाठ पढ़ाया जा सके। उनके हृदय में महिलाओं के प्रति संवेदना एवं सम्मान का भाव जगह सके। प्रत्येक नारी की यह नैतिक जिम्मेवारी है कि वह किसी भी प्रकार का शोषण याअत्याचार को चुपचाप न सहे और

न ही सहने दे , बल्कि उसका कड़े रूप में प्रतिकार करें। आज महिलाएं शिक्षा ,विज्ञान ,खेलकूद , व्यवसाय, सूचना-प्रौद्योगिकी, चिकित्सा आदि सभी क्षेत्रों में पुरुषों से अधिक सफल हो रही हैं। आज की नारी मीडिया ,पत्रकारिता, जनसंचार, सेना ,वायुयान, पर्वतारोहण आदि विभिन्न क्षेत्रों में वर्चस्व कायम कर, लैंगिक असमानता को दूर कर दिखाया है। अतः पुरुषों को यह समझना होगा कि देश के विकास के लिए हर क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता अनिवार्य है। और यह तभी संभव होगा जब हम सभी हृदय से उनकी प्रतिभा के विस्तार के लिए उन्मुक्त और अनुकूल वातावरण प्रदान करेंगे

संदर्भ ग्रंथ

1.कर्मभूमि, प्रेमचंद, पृष्ठ 222
2.युगवाणी, सुमित्रानंदन पंत, पृष्ठ 46
3.ऋग्वेद -7.7.3
4.याज्ञवल्क्य स्मृति
5.उपलब्धि विशेषांक, 07, पृष्ठ 33
6.मनुस्मृति, अध्याय 3 श्लोक 56-60
7.परिधि पर स्त्री, मृणाल पांडे पृष्ठ 09
8.भारतीय नारी: दशा, दिशा, आशारानी व्होरा, पृष्ठ 172